

१५. समाचार : जन से जनहित तक

– डॉ. अमरनाथ 'अमर'

लेखक परिचय : अमरनाथ 'अमर' जी का जन्म ७ अप्रैल १९५६ को पटना (बिहार) में हुआ। आपने 'मीडिया' में पीएच.डी की उपाधि प्राप्त की है। लेखक, कवि, आलोचक तथा दूरदर्शन के सैकड़ों सफल कार्यक्रमों के निर्माता एवं निर्देशक के रूप में आपकी एक अलग पहचान है। आपको प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में लगभग ३५ वर्षों का अनुभव है। हिंदी साहित्य के प्रति आपकी विशेष रुचि के कारण आपने हिंदी साहित्यकारों के जीवन पर अनेक डॉक्यूमेंटरीज और विशेष कार्यक्रमों का निर्माण और निर्देशन किया है। संप्रति आप दूरदर्शन के सलाहकार के रूप में कार्यरत हैं। 'स्पंदित प्रतिबिंब' – (काव्य संग्रह), 'वक्त की परछाइयाँ' (निबंध संग्रह), 'पुष्पगंधा' (कहानी संग्रह), 'इलेक्ट्रॉनिक मीडिया : बदलते आयाम', 'दूरदर्शन एवं मीडिया : विविध आयाम' आदि।

लेख : 'लेख' में किसी भी विषय को लेकर विस्तार से लिखते हैं। अनेक अनुच्छेदों में विषय को विभाजित करके विषय से संबंधित जानकारी को रोचक तरीके से समझाने का प्रयत्न किया जाता है। लेख रचनात्मक साहित्य भी हो सकता है और सूचनात्मक साहित्य भी। इसमें मौलिक, रोचक, उत्कृष्ट जानकारी और रचनात्मक सौष्ठव का मिला-जुला प्रभाव होता है। ऐसे लेख साहित्य की श्रेणी में आते हैं।

पाठ परिचय : आज के वैश्वीकरण के युग में जनसंपर्क माध्यमों में 'समाचार' एक क्रांति, एक मिशन है। समाचार पाठ्य माध्यम है, रेडियो श्राव्य माध्यम है तो दूरदर्शन दृक्-श्राव्य माध्यम है। इस कार्य में सहज, प्रवाहमयी, प्रभावी एवं गरिमामय भाषा की आवश्यकता है। यह एक गंभीर एवं उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य है। लेखन से लेकर प्रसारण तक अनेक छोटे-बड़े अधिकारी तथा कर्मचारियों के समन्वय से यह कार्य पूर्ण किया जाता है। प्रस्तुत लेख में समाचार की आवश्यकता, महत्ता और भविष्य की विविध संभावनाओं को बताया गया है।

आज वैश्वीकरण के युग में समाचार का बहुत महत्त्व है। सैटेलाइट के माध्यम से अब रेडियो, टेलीविजन, मोबाइल, समाचारपत्र में विश्व में घटित घटनाओं के समाचार उपलब्ध होते हैं। संचार के क्षेत्र में यह एक क्रांति है। वस्तुतः समाचार की प्रस्तुति जन से जनहित तक का माध्यम है। कोई भी समाचार जो हम पल भर में देख, पढ़ या सुन लेते हैं, उसके पीछे लोगों की मेहनत, एकाग्रता और प्रतिबद्धता शामिल रहती है।

भारत का पहला समाचारपत्र 'बंगाल गजट' है जिसकी शुरुआत वर्ष १७८० में बंगाल में हुई। समाचारपत्र की शुरुआत होने के बाद विविध भाषाओं में अनेक समाचारपत्र प्रकाशित होने लगे। प्रत्येक समाचारपत्र का ध्येय वाक्य भिन्न होते हुए भी सभी समाचारपत्र राष्ट्रीयता से संलग्न हैं। तीनों माध्यमों ने जनहित में तीन तरह के कार्यक्रमों की रूपरेखा बनाई – मनोरंजन, ज्ञानवर्धन और सूचना का प्रसारण। इसी सूचना में समाचार और समाचार के विविध स्वरूप शामिल हैं।



रेडियो की शुरुआत १६ मई १९२४ को हुई, इसी तरह १५ दिसंबर १९५९ को दूरदर्शन की शुरुआत हुई। आकाशवाणी ने “बहुजन हितायः बहुजन सुखाय” और दूरदर्शन ने “सत्यं-शिवं-सुंदरं” के मूल मंत्र को अपनाकर जनहित में प्रसारण शुरू किया। आज भारत में आकाशवाणी और दूरदर्शन के विविध चैनलों के अलावा अन्य अनेक समाचार चैनलों, विदेशी चैनलों द्वारा प्रसारित किए जाने वाले समाचार घर-घर में पहुँचते हैं। भारत में सिर्फ हिंदी और अंग्रेजी में ही नहीं बल्कि हर प्रदेश की भाषा में भी समाचार प्रसारित किए जाते हैं। परंतु आकाशवाणी और दूरदर्शन के युग में भी समाचारपत्रों का महत्त्व कम नहीं हुआ है। गाँवों से लेकर महानगरों तक हर नागरिक को सुबह-सुबह समाचारपत्र पढ़ने की ललक बनी रहती है। समाचारपत्र भी अंग्रेजी और हिंदी के अलावा क्षेत्रीय भाषाओं में प्रकाशित होते हैं। यह अनेकता में एकता का प्रतीक है, हर भाषा और बोली का सम्मान है। रेडियो समाचार श्राव्य अर्थात् सुनने के माध्यम से प्रस्तुत होता है। इसमें दृश्य नहीं होता। आवाज के माध्यम से दृश्य की अनुभूति कराई जाती है।

समाचारपत्रों को प्रिंट मीडिया कहा जाता है। इसमें कागजों पर समाचारों की छपाई होती है। इसमें भी विविध समाचार एजेंसियों से समाचार प्राप्त किए जाते हैं। इसके अलावा पत्र के अपने रिपोर्टर भी शहर में घूमकर समाचार एकत्र करते हैं। उपसंपादक समाचार के लेखन का कार्य करते हैं। वर्तमान में तो सीधे संगणक में ही समाचार टाइप किए जाते हैं। इस कार्य के बाद मुद्रित शोधन का महत्त्वपूर्ण कार्य होता है।

मुद्रित सामग्री में कहाँ त्रुटियाँ हैं; उन्हें दूर करने के लिए दी गई सामग्री में ही संकेत लगाने होते हैं। जिस स्थान पर जो अंश शुद्ध किया जाना है, उसे हाशिये में लिखा जाता है। पहली आधी पंक्ति की अशुद्धियों के संकेत बाईं ओर तथा दूसरी आधी पंक्ति की अशुद्धियों के संकेत दाईं ओर लगाए जाते हैं। मुद्रित शोधन के कुछ विशिष्ट संकेत होते हैं। इन संकेतों द्वारा मुद्रित शोधक बताता है कि शुद्धि किस प्रकार की जानी है। इस प्रकार पुस्तक को शुद्ध, समुचित, मानक साहित्यिक भाषाई रूप प्रदान करने

का कार्य सही अर्थ में मुद्रित शोधक करता है। अतः मुद्रण कार्य में मुद्रित शोधक का अपना विशिष्ट स्थान है।

उसके बाद प्रधान संपादक की ओर से हरी झंडी मिलने पर समाचारों की पृष्ठानुसार सेटिंग की जाती है। इसके बाद छपाई का काम होता है। दूरदर्शन/टेलीविजन दृश्य अर्थात् देखने का माध्यम है, जिसमें श्राव्य भी शामिल होता है। वस्तुतः समाचार लेखन से प्रसारण तक के कार्यों के कई पक्ष हैं। जैसे – समाचार कक्ष में विभिन्न समाचार एजेंसियों से असंख्य समाचार प्राप्त होते हैं। उन समाचारों को दूरदर्शन में प्रस्तुति के हिसाब से तैयार करना, संबंधित समाचार से जुड़े क्लिपिंग्स, (विजुअल्स/दृश्य) का संपादन करना, फिर उन्हें एक क्रम में तैयार करना। इसके पश्चात स्टुडियो में समाचार वाचक/वाचिका द्वारा समाचारों को पढ़ना, पी.सी.आर पैनल से निर्माता-निर्देशक द्वारा निर्देश देना। समाचार प्रस्तुत करने से पूर्व समाचार संपादक अपनी कुशलता से समाचार की महत्ता, प्रासंगिकता को क्रमबद्ध रूप से तैयार करता है। फिर उससे संबंधित चित्र, फिल्म या कवरेज/रिपोर्टिंग की फुटेज देखकर समाचार के स्वरूप को शब्दों में ढालता है। ये क्लिपिंग्स कई बार रिकार्डेड होती हैं तो कई बार संवाददाता द्वारा लाइव भी दी जाती हैं। चूँकि दूरदर्शन/टी.वी. चैनल्स (विजुअल) दृश्य मीडिया हैं। इसलिए इसमें समाचार की पटकथा रेडियो समाचार की तरह बड़ी नहीं होती है। इस टीम में प्रोड्यूसर, इंजीनियर, कैमरामैन, फ्लोर मैनेजर, वीडियो संपादक, ग्राफिक आर्टिस्ट, मेकअप आर्टिस्ट, टेप लाइब्रेरी, समाचार संपादक तथा अन्य भी बहुत सारे कर्मचारी/अधिकारी शामिल होते हैं। समाचार के लेखन, वाचन और प्रसारण तक यह पूरी-की-पूरी टीम गंभीरता से एक-दूसरे से जुड़कर समाचार प्रस्तुति को पूर्ण करते हैं। मूल रूप से समाचार वाचक अब समाचार एंकर की भूमिका भी निभा रहा है अर्थात् समाचार पढ़ने के साथ-साथ वह समाचार से जुड़े अन्य पक्षों की एंकरिंग और रिपोर्टिंग भी करता है। किसी का साक्षात्कार भी लेता है, चैनल परिचर्चा में भी सवाल करता है। इसके बीच में वह तत्काल घटी घटनाओं को “ब्रेकिंग न्यूज” के रूप में शामिल करता है।

यूँ तो हर कार्यक्रम की रिकार्डिंग और प्रस्तुति में सामान्य कैमरा का प्रयोग होता है लेकिन समाचार वाचक जिस कैमरे को देखकर समाचार पढ़ता है, उसमें टेलीप्रॉम्प्टर की सुविधा होती है। टेलीप्रॉम्प्टर के समाचार पढ़ते समय समाचार वाचक टेबल पर नीचे नजर कर पढ़ने की बजाय सामने स्क्रीन की ओर देखते हुए समाचार पढ़ता है पर हमें ऐसा लगता है जैसे वह हमारे सामने बातचीत कर रहा है। लगभग सभी टी.वी. चैनल पर समाचार पढ़ने की तकनीक एक जैसी होती है। समाचार वाचक के लिए प्रभावशाली व्यक्तित्व के साथ-साथ सुयोग्य आवाज, उच्चारण की शुद्धता, भाषा का ज्ञान, शब्दों का उतार-चढ़ाव एवं भाषा का प्रवाहमयी होना बहुत ही जरूरी होता है।

समाचारपत्र, रेडियो और टेलीविजन में समाचार प्राप्त करने के अनेक साधन होते हैं। जैसे - समाचार एजेंसियाँ, संवाददाता, प्रेस विज्ञप्ति, भेंटवार्ताएँ, साक्षात्कार, क्षेत्रीय जनसंपर्क अधिकारी, राजनीतिक पार्टियों के प्रवक्ता, मोबाइल पर रिकॉर्ड की गई कोई जानकारी। सारे विश्व में समाचारों का संकलन और प्रेषित करने का काम मुख्यतः समाचार एजेंसियाँ करती हैं। समाचार एजेंसियों के क्षेत्रीय ब्यूरो समाचारों का प्रांतीय या केंद्रीय कार्यालयों तक टेलीप्रिंटर द्वारा पहुँचाते हैं और मुख्य कार्यालय उन्हें पुनर्संपादित कर क्षेत्रीय एवं ब्यूरो कार्यालय को भेजता है; जिनके टेलीप्रिंटर रेडियो और टेलीविजन के संपादित समाचार कक्ष में इन समाचारों को भेजते हैं। भारत में मुख्यतः विदेशी और भारतीय समाचार एजेंसियों में रायटर, प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया (पी.टी.आई.), यूनाइटेड न्यूज ऑफ इंडिया (यू.एन.आई.), यूनीवार्ता एजेंसियाँ समाचार उपलब्ध कराती हैं।

समाचारों का एक अन्य प्रमुख स्रोत है- प्रेस विज्ञप्ति। केंद्र सरकार की खबरें, पत्र, सूचना कार्यालय द्वारा और राज्य सरकार की खबरों की सूचनाएँ जन संपर्क विभाग की प्रेस विज्ञप्तियों से मिलती हैं। इनके अलावा सार्वजनिक प्रतिष्ठान, शोध तथा निजी संस्थानों के जनसंपर्क अधिकारी और प्रेस के संवाददाता भी समाचार उपलब्ध कराते हैं।

राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, उपराष्ट्रपति, लोकसभा अध्यक्ष, राज्यपाल, न्यायाधीश आदि के पद गरिमामय

होते हैं। समाचार में इस गरिमा का ध्यान रखना जरूरी है।

आज समाचार का स्वरूप और प्रकार बहुत विस्तृत हो चुका है। राजनीतिक, संसद, विकासात्मक, खेल, व्यापार, रोजगार, विज्ञान, बजट, चुनाव, कृषि, स्वास्थ्य, लोकरुचि से संबंधित समाचार। समाचारों की अवधि भी आज अलग-अलग हैं। मुख्य समाचार दो मिनट, पाँच मिनट, दस मिनट और पंद्रह मिनट के बुलेटिन। इनके अलावा परिचर्चा आदि भी समाचार के ही अंग हैं।

समाचार के कुछ महत्वपूर्ण पक्ष हैं जिन पर ध्यान देना बहुत जरूरी है - समाचार की भाषा सरल और सहज हो। समाचार के वाक्य छोटे-छोटे हों। प्रदेश और क्षेत्र की भाषा की गरिमा के अनुकूल वाक्य हों। समाचार में ऐसी बात न हो जिसमें किसी धर्म, जाति, वर्ग की भावना को चोट पहुँचे। किसी भी चैनल पर समाचार की प्रस्तुति राष्ट्रहित, एकता और अखंडता को ध्यान में रखकर होनी चाहिए।

इस क्षेत्र में रोजगार की बहुत सारी संभावनाएँ हैं। प्रोड्यूसर और समाचार संपादक के लिए यू.पी.एस.सी. परीक्षाएँ देनी होती हैं। कैमरामैन, वीडियो संपादक, ग्राफिक आर्टिस्ट मान्यताप्राप्त संस्थाओं से डिग्री/डिप्लोमा लेकर इस परीक्षा में भाग ले सकते हैं। इसी तरह इंजीनियरिंग विभाग में डिग्री/डिप्लोमा लेकर संबंधित परीक्षाओं में सफल होकर रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। संवाददाता और समाचार वाचक भी स्वर परीक्षा, साक्षात्कार आदि द्वारा निपुण हो सकते हैं। दूरदर्शन में जितना महत्व पर्दे पर आने वाले लोगों का है, उससे तनिक भी कम महत्व पर्दे के पीछे काम करने वालों का नहीं है। इस क्षेत्र में अपनी योग्यता, क्षमता और प्रतिभा के अनुरूप रोजगार प्राप्त हो सकता है।

वस्तुतः रेडियो, समाचारपत्र और टी.वी. पत्रकारिता एक मिशन है, उत्तरदायित्व और कर्तव्यनिष्ठा है। देश के प्रति जागरूकता और सामाजिक सरोकार के दायरे में जनहित का महत्व है। समाचार/संचार के क्षेत्र में जनहित एक मशाल है और पत्रकार उसकी एक-एक किरण। आवश्यकता इस बात की है कि सब मिलकर देश को गौरवान्वित करें। सफलता, राष्ट्रीय एकता, अखंडता, सद्भाव और भाईचारा से प्रकाशमान करें।

— 0 —

पाठ पर आधारित

- (१) टेलीविजन के लिए समाचार वाचन की विशेषताएँ लिखिए ।
- (२) रेडियो और टेलीविजन के लिए समाचार प्राप्त करने के साधन लिखिए ।
- (३) समाचार के महत्वपूर्ण पक्ष स्पष्ट कीजिए ।

व्यावहारिक प्रयोग

निम्नलिखित विषयों पर आकाशवाणी/दूरदर्शन/समाचारपत्र के लिए समाचार लेखन कीजिए ।

- (१) अकाल से उपजी गंभीर स्थितियाँ ।
- (२) विश्वभर में बढ़ती हुई खादी की माँग ।

● समाचार लेखन के सोपान

- (१) समग्र तथ्यों को एकत्रित करना ।
- (२) समाचार लेखन का प्रारूप तैयार करना ।
- (३) दिनांक, स्थान तथा वृत्तसंस्था का उल्लेख करना ।
- (४) परिच्छेदों का निर्धारण करते हुए समाचार लेखन करना ।
- (५) शीर्षक तैयार करना ।

● समाचार लेखन के लिए आवश्यक गुण

- (१) लेखन कौशल
- (२) भाषाई ज्ञान
- (३) मानक वर्तनी
- (४) व्याकरण

● समाचार लेखन के मुख्य अंग

- (१) **शीर्षक** – शीर्षक में समाचार का मूलभाव होना चाहिए । शीर्षक छोटा और आकर्षक होना चाहिए ।
- (२) **आमुख** – समाचार के मुख्य तत्वों को सरल, स्पष्ट रूप से लिखा जाए । घटना के संदर्भ में कब, कहाँ, कैसे, कौन, क्यों आदि जानकारी हो ।

समाचार के कुछ विषय

- (१) अपने कनिष्ठ महाविद्यालय में मनाए गए 'विज्ञान दिवस' का समाचार लेखन कीजिए ।
- (२) 'शिक्षा के क्षेत्र में ई-तकनीक का प्रयोग' का समाचार लेखन कीजिए ।
- (३) 'पर्यावरण संवर्धन में युवाओं का योगदान' का समाचार लेखन कीजिए ।